शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अमझेरा के सीरवी समाज की सामाजिक मान्यताएँ

दिवाकर सिंह तोमर (शोधार्थी)
श्री नटनागर शोध संस्थान
सीतामऊ, मंदसौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत की सामाजिक संरचना अत्यंत विविधतापूर्ण है। यहाँ की प्रत्येक जाति और समाज का अपना इतिहास है। देश के हृदय स्थल में स्थित मध्यप्रदेश आदिवासी बहुल राज्य है। यहाँ की जनजातीय सभ्यता और संस्कृति अपने आप में अनूठी है। राजनितिक परिवर्तनों के साथ यहाँ की सामाजिक संरचना भी बदलती रही है। अनेक समाजों के समान ही सीरवी समाज का भी अपना इतिहास और जीवन मूल्य रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में सीरवी समाज की सामजिक मान्यताओं पर विस्तार से चिंतन किया गया है।

प्रस्तावना

अमझेरा वर्तमान समय में धार जिले के सरदारपुर तहसील के अंतर्गत आता है। इसकी स्थापना सन् 1604 ई. में राव जगन्नाथ ने की थी।[1] इतिहास में इसकी प्रसिद्धि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक राव बख्तावर सिंहजी की वजह से है। ये अंग्रेजों से बहुत ही वीरता और बहादुरी के साथ लड़े थे एवं 10 फरवरी 1858 ई. को शहीद हुए[2] इनकी शहादत के प्रति देश सदैव नतमस्तक रहेगा। अमझेरा में फील्ड वर्क के दौरान पाया कि यहां एक कृषक समाज रहता है जो बहुत ही सम्पन्न है। ये सीरवी समाज के लोग हैं, जो 300 साल पहले (जालोर) राजस्थान से आए थे। सीरवी समाज के दसवें धर्म गुरु दीवान श्री हरिदास जी की सन् 1785 में महेश्वर में अहिल्याबाई द्वारा बनवाई गई छतरी इस बात का प्राचीनतम प्रमाण है कि मालवा में सीरवी समाज के लोग बहुत लंबे समय से रहते है।[3] मालवा में मालवा के आठ जिलों मे सीरवी समाज के लोग रहते हैं। ये आठ जिले हैं-रतलाम, उज्जैन, खरगोन, बड़वानी, झाबुआ, राजसमंद, धार, देवास। तत्कालीन अमझेरा राज्य एवं वर्तमान समय के सरदारपुर एवं मनावर तहसील के अंतर्गत दंतोली, दत्तीगांव, रतनपुरा, कंजरोटा, सोनगढ़, अमोदिया, दसई, करनावद, मोलाना, धुलेट, दलुपुरा, गुमानपुरा, पीपरनी, छड़ावद, रिंगनोद, राजगढ़, राजपुरा, चालनी, उमरकोट, बालीपुर आदि में सीरवी समाज के लोग रहते है।[4]

सीरवियों के दो भेद हैं जिनमें से एक खारड़िया और दूसरा जेनाई कहलाता है। अमझेरा राज्य में खारडिया सीरवी रहते हैं। यदि इनके इतिहास की बात करें तो कुछ इतिहासकारों का मत है कि गुजरात प्रांत के उत्तरी भाग की भूमि खारी व खाबड़ होने से उसे खारी खाबड़ कहा जाता है। सौराष्ट्र के दक्षिण में स्थित वेरावल बंदरगाह के पास में प्रभास पाटन में कोयलपुर (दीवद्वीप) राज्य था, जिसके शासनकर्ता अनंतराय सांखला (पंवार) खारी खाबड़ में रहते थे एवं जूनागढ़ राजकोट के आसपास गिरनार राज्य था, जिसके राजा कहवाट थे। एक बार इनके बीच मनमुटाव होने से युद्ध हुआ जिसे कोयलपुर युद्ध के नाम से

जानते हैं। इस युद्ध में अनंतराय की हार हुई किन्तु कहवाट ने इसे माफ कर दिया और फिर से गद्दी पर आसीन किया, किन्तु उका ने कोयलपुर युद्ध में हारे हुए कोयलिया सैनिकों को पकड़ लिया और अनंतराय ने इन सैनिकों को छुड़ाने का प्रयास तक नहीं किया। इस कारण गिरनार के कारागार में कैदी कोयलिया राजपूत अपने राजा अनंतराय से नाराज थे। बाद में कहवाट ने अपनी बहन के कहने पर बंदी कोयलिया सैनिकों को उनके हित की बात रखते हुए कहा अगर आप लोग शस्त्र धारण नहीं करने की शपथ ग्रहण करते है तो मैं सभी कैदियों को मुक्त कर देता हूँ। कहवाट ने सभी सैनिकों को शस्त्र धारण नहीं करने से वचनबद्ध करके रिहा कर दिया था। कोयलिया राजपूत कहवाट की कैद से मुक्त होकर कोयलपुर आने पर अनंतराय से मिलना और उनसे जवारड़ा करना भी उचित नहीं समझा और सभी राजपूतों ने कोयलपुर छोड़ने का निर्णय कर लिया।

विक्रम संवत 1335 में एक दिन प्रभात की पहली किरण निकलने से पहले गाड़ियों में अपने-अपने परिवार के साथ दुःखी मन से कोयलपुर को पीछे छोड़कर चल दिए। वहां से उत्तर दिशा में चलते ठहरते एक दिन जिला कच्छ में आकर सभी जनों ने राज्य अन्हिलवाड़ा में निवास किया। कच्छ में लूनी नदी बहती है। लूनी नदी का पानी बालोतरा से आगे खारा होता है। यहां खाबड़ा नगर भी है। इस कारण यह क्षेत्र खारी खाबड़ के नाम से पुकारा जाता है। इस क्षेत्र में क्षत्रियों के रहने पर आगे चलकर खारड़िया राजपूत कहलाने लगे। उस समय वहां पर अन्हिलवाड़ा पाटन पर करण बाघेला सोलंकी का राज था। खारी खाबड़ क्षेत्र उसी की रियासत में आता था।[5]

विक्रम संवत 1355 में पाटन पर अलाउद्दीन का शासन स्थापित हो गया था और कुतुबतातार को पाटण का सुल्तान बनाया गया। तुर्कों का अत्याचार ज्यादा बढ़ने के कारण खारड़िया राजपूतों ने गुजरात छोड़ने का मानस बना लिया था। यह खारड़िया राजपूत जालोर जाने के इच्छुक थे। उस समय जालोर एक शक्तिशाली राज्य माना जाता था। खारड़िया राजपूतों को गुजरात में हुए अलाउद्दीन के अत्याचारों की चिंता सता रही थी। इस कारण उन्हें जालोर की सहायता करने का अच्छा अवसर मिल गया। सभी खारड़िया राजपूत अपने घर बाहर की सामग्री लेकर परिवार सहित जालोर पहुंच गए। कान्हड़दे ने इन खारड़िया राजपूतों को जालोर की सेना में भर्ती कर लिया। राजा कान्हड़दे ने प्रसन्न होकर इन सैनिकों को परिवार के साथ रहने के लिए उचित क्षेत्र बता दिया था। यह खारड़िया राजपूत तिलवाड़ा से पश्चिम में थोड़ा आगे खारी नदी के उत्तर किनारे पर खाबड़ा गांव बसाकर रहने लगे। इसी क्षेत्र में खारी नदी के दक्षिण किनारे पर जणवा सीरवियों का निवास जणवा गांव है।[6]

खारडिया राजपूतों के प्रधान जांजणदे गहलोत ने अपने साथियो ने अपने मन की बात राजा कान्हड़दे के सामने रखी। महाराज! हम कृषि व्यवसाय करना चाहते हैं, हमें उपयुक्त कृषि भूमि उपलब्ध करा दीजिये। कान्हड़दे ने प्रसन्न होकर उसी समय सभा में बैठे जालोर के जमींदारों को आदेश जारी किया। खारड़िया राजपूतों का आज के दिन जिस क्षेत्र में निवास उस क्षे के जमींदार इन खारड़िया राजपूतों को कृषि हेतु भूमि देवें।[7]

सभी जमींदारों ने राजा के आदेश को प्रसन्न मन से स्वीकार कर लिया। कान्हड़दे ने कहा कि

हमारे जालौर में सीर री खेती करने वालों को सीरवी कहा जाता है। कान्हड़दे ने खारड़िया राजपूतों से कहा आज से आपको खारडिया राजपूत से खारड़िया सीरवी पुकारा जाएगा।[8]

खारड़िया सीरवी के गौत्र

खारडिया सीरवी को 24 गौत्रों में बांटा गया है, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं। मुख्य गौत्रों के उप गौत्र भी हैं।[9]

सीरवी लचेटा गौत्र का उद्भव

विक्रम संवत 8वीं शताब्दी में प्रतिहार (परिहार) हिन्दुजी सिंधुजी ने एक ढाणी बसाई जिसे आज लेटा गांव (पुराना) के नाम से जाना जाता है। हिन्दुजी ने यह ढाणी जाबालिपुर से कई दशकों पहले बसाई थी। हिन्दुजी की यह ढाणी सुन्दरा बाव (जालोर तालाब) के पूरब दिशा में लगभग 6 किमी. दूरी पर है। यहीं पर इनका समुदाय पशुपालन और खेती बाड़ी कर अपना जीवन यापन करने लगा। हिन्दुजी के स्वर्ग सिधारने पर उनकी याद में उनके पुत्र लेचटा में सिंधु नाड़ी खुदवाई, जो आज लेटा कावड़ा तालाब कहलाता है। परिहार लेसटा ने अपनी मां लकमी की याद में भी एक नाड़ी खुदवाई जो नकमी नाम से आज भी लेटा में मौजूद है। लेसटा जी धर्मात्मा, परोपकारी व भगवान शिव के सच्चे भक्त थे। लेसटा जी अपनी ढाणी से दूर बाग में शिवलिंग की स्थापना कर शिव उपासना कर शिव उपासना करते थे। जहां पर नीम वगैरह के पेड़ लगाए गए थे, जिसे लेसटा बाग कहा जाता है। जो आज भी पुराना लेटा गांव भगवान शिव मंदिर के परिसर में स्थित है। श्री लेसटा का देवलोक गमन विक्रम संवत 964 चैत्र सुदी 10 था। इन्हीं महान पुरुष श्री लेसटा की स्मृति में पूर्वजों ने अपनी ढाणी का नाम लेसटा ढाणी रखा। जो बाद में ढाणी ने अपना नाम लेटा गांव का रुप ले लिया। लेटा गांव वर्तमान में राजस्थान के जालौर जिले में स्थित है।

परिहार - इस वंश को पनिहार, पड़ियार, परिहार, प्रतिहार या गुर्जर प्रतिहार वंश भी कहा जाता है। नई शोध से पता चला है कि यह वंश राम के अनुज भ्राता लक्ष्मण का वंश है। वनवास काल में लक्ष्मण भगवान राम तथा सीता के प्रतिहार (द्वारपाल) के रुप में रहे थे। अतः इन्हें प्रतिहार की उपाधि से विभूषित किया गया था। यह मत जोधपुर महाराजा बाउक के नौवीं शताब्दी के शिलालेखों से भी प्रमाणित होता है। यह वंश विशुद्ध सूर्यवंशी है।[10]

सीरवी मोगरेचा गौत्र का उद्भव - खारडिया सीरवियों का इतिहास एवं समाज के राव भाट इस गौत्र का निकास परिहार से बताते हैं। मोगरेचा बंधु भी स्वयं को परिहार से मानते है।

सीरवी सीन्दड़ा गौत्र का उद्भव - समाज के राव भाट के अनुसार इस गौत्र की मुख्य शाखा परिहार है।

सीरवी परिहारिया गौत्र का उद्भव - समाज के राव भाट अपनी बही से इस वंश का निकास पंवार में से बताते है। परिहारिया बंधु स्वयं को रघुवंशी कहने से ज्ञात होता है कि यह वंश परिहार से है।

सीरवी राठौड़ शाखा का उद्भव - यह वंश रघुवंशी भगवान राम के द्वितीय पुत्र कुश का वंश है। इस वंश का प्राचीन नाम राष्ट्रकूट है। राष्ट्रकूट से विकृत होकर राठौड़, राउटड़, राठौड़, या राठौर प्रसिद्ध हुआ। यह वंश विशुद्ध सूर्यवंशी है।

सीरवी भुंभाड़िया गौत्र का उद्भव - भुंभाड़िया बंधु अपनी गौत्र का उद्भव राठौड़ से मानते हैं।

सीरवी बर्फा गौत्र का उद्भव - समाज के रास्भाट बर्फा गौत्र का उद्गम राठौड़ से मानते है।

सीरवी चौहान शाखा का उद्भव - महर्षि वत्स जो कि वैदिक युग मे हुए के वंशज चौहान हैं। महर्षि वत्स के वंश में चहवाण, चाहभान, चायमान, चव्वहाण और धीरे-धीरे चौहान कहलाए।

सीरवी मुलेवा गौत्र का उद्भव - मुलेवा बंधु स्वयं अपनी गौत्र का निकास चौहान से होना मानते हैं।

सीरवी सेपटा गौत्र का उद्भव - सेपटा गौत्र को चौहान की शाखा बताते हैं।

सीरवी देवड़ा गौत्र का उद्भव - चौहानों के बारे मे लिखे गए मुहणोत नैणसी के अनुसार चौहान लाखण के वंशज आसराव की पत्नी देवी स्वरुपा थी। अतः इसके वंशज देवड़ा कहलाए।

सीरवी सीयाल गौत्र का उद्भव - समाज के राव भाटों की बही के अनुसार सीयाल गौत्र का उद्भव चौहान वंश से हुआ है।

सैणचा - समाज के राव भाट की बही से ज्ञात होता है कि सैणचा गौत्र का निकास चौहान से हुआ है।

सीरवी सोनगरा गौत्र का उद्भव - समाज के राव भाट अपनी बही के अनुसार सोनगरा गौत्र का उद्भव चौहान वंश से मानते है।

सीरवी आगलेचा गौत्र का उद्भव - समाज के राव भाट अपनी बही से आगलेचा गौत्र का निकास चौहान से बताते है।

सीरवी गहलोत शाखा का उद्भव - यह वंश भगवान राम के पुत्र लव का वंश है।

सीरवी खण्डाला गौत्र का उद्भव - खण्डाला सीरवियों का इतिहास गहलोत की खोंप से बताया गया है।

सोलंकी वंश की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों में मतभेद है पृथ्वीराज रासो में इसे अग्नि से उत्पन्न माना गया है। कर्नल टॉड विलियम कुक इसे विदेशियों से उत्पन्न मानते हैं। उत्तर के सोलंकी और दक्षिण के सोलंकी अलग-अलग हैं। उत्तर के सोलंकी का गौत्र भारद्वाज है और दक्षिण के सोलंकी का गौत्र मानव्य है।[11]

सीरवी पंवार शाखा का उद्भव - उदयपुर प्रशस्ति में इसे सूर्यवंश से संबंधित माना गया है। जगदीश सिंह गहलोत, परमार वंश पृ. 43 मरान भारतीति परमारः अर्थात् शत्रुओं को मारने के कारण ही इन्हें परमार या बाद मे प्रमार पंवार कहा जाने लगा। कवि चंदबरदायी ने इसे अग्निवंश से उत्पन्न माना है।

सीरवी हाम्बड़ गौत्र का उद्भव - हाम्बड़ बंधु भी अपने गौत्र का निकास पंवार से होना मानते हैं।

सीरवी भायल गौत्र का उद्भव - समाज के राव भाट का यही मत है कि भायल गौत्र का उद्भव पंवार से ही हुआ है।

सीरवी काग गौत्र का उद्भव - समाज के भाटों के अनुसार काग गौत्र का निकास पंवार से ही हुआ है।

सीरवी गारिया भायल गौत्र का उद्भव - खारड़िया सीरवियों का इतिहास में चंद्रजी इस गौत्र का विकास पंवार से बताते है।

सीरवी लखावत गौत्र का उद्भव - राजपूत वंशावली के अनुसार राठौड़ वंश के रमणलोत वंशों से लखावत गौत्र का उद्गम जान पड़ता है। लखावत बंधु अपना विकास परिहार से मानते हैं।

सीरवी लालावत गौत्र का उद्भव - लालावत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव राठौड़ से मानते हैं।

सीरवी भाकरणी गौत्र का उद्भव - भाकरणी बंधु अपना विकास राठौड़ में से मानते हैं।

सीरवी उदावत गौत्र का उद्भव - उदावत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव राठौड़ से मानते हैं।

सीरवी चांवड़िया गौत्र का उद्भव - चांवड़िया बंधु स्वयं की गौत्र का विकास राठौड़ से होना मानते हैं।

सीरवी चंदावत गौत्र का उद्भव - चांदावत बंधु अपना विकास राठौड़ से होना मानते हैं।

सीरवी सोमावत (सोभावत) गौत्र

सीरवी नारनवाल गौत्र का उद्भव - नारनवाल अपनी गौत्र का विकास राठौड़ से मानते हैं।

सीरवी चैथजीवाला गौत्र का उद्भव - छौरजीहाल बंधु अपनी गौत्र का विकास राठौड़ से मानते हैं।

सीरवी पोमावत - पोमावत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव राठौड़ से मानते हैं।

सीरवी झांझावत गौत्र का उद्भव - झांझावत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव राठौड़ से मानते हैं।

सीरवी भियांवत गौत्र का उद्भव - भियांवत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव राठौड़ से होना मानते हैं।

सीरवी अमरावत गौत्र का उद्भव - अमरावत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव परिहार से मानते हैं।

सीरवी मेहरावत गौत्र का उद्भव - मेहरावत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव परिहार से मानते हैं।

सीरवी मालावत गौत्र का उद्भव - मालावत बंधु अपनी गौत्र का उद्गम गहलोत से होना मानते हैं।1

सीरवी सांदपुरा गौत्र का उद्भव - इस गौत्र का उद्भव गहलोत से है।

सीरवी परेरिया गौत्र

सीरवी मादावत गौत्र का उद्भव - मादावत बंधु अपनी गौत्र का उद्भव हाम्बड़ से होना मानते हैं।

पीतावत - पीतोजी के वंशज पुलावत कहलाते हैं। इस गौत्र का उद्भव आगलेचा से है।

पुलावत - पुलोजी के वंशज पुलावत कहलाते हैं। इस गौत्र का उद्भव हाम्बड़ से है।

चिरावत - चेराजी के वंशज चिरावत कहलाते हैं। इस गौत्र का उद्भव चोयल से है।

दीपावत - दीपाजी के वंशज दीपावत कहलाते हैं। इस गौत्र का उद्भव राठौड़ से है।

खिंयावत - इस गौत्र का उद्भव परिहार से है।

मोटावत - मोटाजी के वंशज मोटावत कहलाते हैं। इस गौत्र का उद्भव परिहार से है।

सीरवी समाज में विवाह प्रक्रिया[12]

मनुष्य जीवन में विवाह संस्कार के तीन प्रमुख उद्देश्य प्राप्त होते हैं। प्रथम धर्म कार्यों को करने के लिए विवाह किया जाता है। द्वितीय पुत्र प्राप्ति के लिए विवाह आवश्यक है। तृतीय स्वाभाविक कामतृप्ति अथवा रतिक्रिया भी विवाह का एक प्रयोजन है।

सीरवी समाज मे विवाह प्रक्रिया को निम्नलिखित बिन्दुओं में समझ सकते हैं।

सगपण - सीरवी समाज में पहले लड़का-लड़की का सगपण की रस्मपूर्ण की जाती है। इस समाज में सगपण दो तरह की होती है। एक इकेवड़ा तथा दूसरा दोवड़ा। पहला इकेवड़ा (खुला सगपण) लड़की देते हैं मगर बदले में उसी घर से लड़की नहीं लेते हैं। दूसरा सगपण दोवड़ा मतलब (सामा-सामी) लड़की देकर बदले में उनके नजदीक रिश्ते से लड़की लेते हैं।

गहना मंगवाना - लड़की वाले जब लड़की के लिए गहना मंगवाते हैं, तब ही लड़के वाले गहने लाते हैं। लड़के वालों की तरफ से गहनों में लड़की के लिए मुख्य गहना मांग की पहचान बोर और पांवों में कड़िया (पायल) व कपड़ों में (लाल) कुंकम रंग का वेश इसके अलावा लड़के वालों की इच्छा के अनुसार सोना व चांदी के गहने लाए जाते हैं।

विवाह का श्रेष्ठ सावा - समाज में अक्षय तृतीया (आखातीज) वैशाख सुदी 3 का दिवस सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। गांव मे एक मुहूर्त पर एक ही परिवार का विवाह करने के भाव से विवाह के लिए लड़की का पिता ब्राह्मण से श्रेष्ठ सावा निकलवाकर (शुभ विवाह का निर्धारित समय) परिवार मुखिया के साथ सावा लिखवाने की

दिनांक व विवाह की श्री समाज में बड़ेर में उपस्थित समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों और भाईपा के समक्ष घोषणा करता है कि हमारे परिवार में उक्त भाई की लड़की, लड़कियों का विवाह श्रेष्ठ दिवस पर श्रेष्ठ मुहूर्त है। आप श्री पंचगणों से प्रार्थना है कि उक्त दिवस पर सावा लिखवाने के श्री गणेश से विवाह के समस्त कार्यों व सीख दिलवाने विदाई समारोह तक संपूर्ण व्यवस्था बनाकर इस शुभ विवाह कार्य को एकल बनावे। इस तरह विवाह परिवार का मुखिया विवाह से संबंधित कामकाज की जमावारी समाज पर छोड़ देता है।

सावा लिखना - उक्त समय पर ब्राह्मण द्वारा सावा (कुन्कुम पत्रिका) लिखवाने भाई बंधु व ननिहाल पक्ष और वरपक्ष को आमंत्रित किया जाता है। निर्धारित समय पर श्रेष्ठ मुहूर्त में और लड़की का गहना पहले न मंगवाया गया हो तो उस दिन गहना भी मंगवाते हैं। सावा में लिखी कुन्कुम पत्रिका के साथ एक नुम्बका नारियल मौली से सुरक्षित बांधकर उसी शाम वधू का भाई, मामा, फुफा या नजदीक रिश्तेदारों में कोई भी वरपक्ष वालों के यहां लेकर जाते हैं। उस समय वर उपस्थित है तो वर को अन्यथा उनके परिवार के मुखिया को नारियल दिया जाता है।

बिन्दोले बैठाना - सावा (कुन्कुम पत्रिका) भेजे जाने व सावा आ जाने पर वधु व वर को बिन्दोले बैठाने का दिवस निश्चित कर घर का मुखिया 11, 9, 7, 5 दिनों का तय कर लेते हैं या ब्राह्मण से भी पूछ लेते हैं। मगर बिंदोले बैठाने की रस्म तो ब्राह्मण द्वारा ही पूरी की जाती है। बींद बिंदणी का बिन्दोले बैठने के बाद के दिन बहुत लाड़ प्यार और बनाव-श्रृंगार में बीतते हैं।

जान-जीमण - लड़के वालों की तरफ से विवाह के पहले दिन जान जीमण रखा जाता है। उसी दिन ननिहाल से बींद व उसके परिवार के लिए कपड़ा व गहने व कुछ रुपए जिसे भींद भागा भरना कहते है। बींद को कपड़ों, गहनों व फूलों से सजाने की जिम्मेदारी ननिहाल पक्ष की होती है।

बड़ी बंदोली - विवाह के निमित्त वर-पक्ष वालों के द्वारा आयोजन प्रीतिभोज (जान-जीमण) के दिन ही और आजकल पहले भी सुविधानुसार कर दिया जाता है। शाम को बड़ी बंदोली का कार्यक्रम रहता है। इस दिन की बंदोली को विशेष महारथी बंदोली कहते है। यह बंदोली परिवार व पूरे गांव वालों के साथ बींद को घोड़े पर सवार कर विशेष तैयारियों से बैंड वाद्यों व ढोल नगरों से गांव में निकाली जाती है। बींदणी के वहां भी विवाह के पहले दिन की शाम को ही महारथी बंदोली का उत्सव रहता है।

विनायक - शुभ विवाह में रिद्धि-सिद्धि के दातार श्री विनायक जी महाराज को पांच दिन के पहले ही कुम्हार के वहां गेहूँ, घी, गुड़, तेल व पूजा सामग्री के साथ जाकर चौक की पूजा करके ढोल ढमाकों के साथ औरतें नाचती हुई लाती है और कुल देवी-देवता के मंदिर जिसे माया कहते हैं, वहां खुर्खणिए रखे जाते हैं। उसमें समस्त परिवार की औरतें पतासा, खारकों, गुड़ व पैसे डालती हैं। उसी दिन बींद बींदणी को अपने घर में उबटन के बाद माया के सामने परिवार की सुहागन औरतों द्वारा पांच-पांच बार तेल चढ़ाया व उतारा जाता है।

मौबण या थाम्बला स्थापित करना - विवाह के दिवस में बींदणी के घर के चौक में थाम्बला या मौबण स्थापित किया जाता है। एक बेरे या ढाणी में एक से ज्यादा परिवारों में से कन्याओं के लग्न होते हो तो उस विवाह स्थल के मुख्य

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

द्वार पर मुहरत से मौबण को स्थापित करके उसे सजाया जाता है और घर के चौक में तणी बांधी जाती है। उसमें एक लाल कपड़े में खोपरा व पांच खोज जो मैदा के ओट से बनाए जाते हैं, सिरोए जाते हैं। जहां विवाह मण्डप सजाया जाता है, उसे मौंडवास कहते हैं।

बारात निकासी - बींद राजा की बारात निकासी से पहले बींद को उबटन लगाकर स्नान के बाद माया के सामने तेल चढ़ाया जाता है और अपने कुल देवी-देवता अथवा इष्टदेवी के मंदिर में नारियल अर्पण करके बडेर/घर से बींद के गले में कटारी, हाथ तलवार लिए सावा के रुप में भेजा गया। नुम्ब का नारियल जो वधू पक्ष द्वारा लाया गया था, उसे करसबंधा से बांधा जाता है और सिर पर मौड़ व कलगी, तुरा व तारों की तरह सवार होकर श्रेष्ठ चौघड़ियां में बारात निकासी होती है।

बारात स्वागत - बारात आगमन के समाचार मौड़ में पहुंचते ही मौड़ियों द्वारा बारातियों का स्वागत साल्व और फूल मालाओं से किया जाता है।

कंवारा भात - निमंत्रित मेहमानों व गांव वाले जब मौड़ के पट्टा (भोजनशाला) में भोजन पा चुके है। तब जनवासे में आदमी भेजकर बारातियां व बींद को कंवारी भात जीमण के लिए आमंत्रित किया जाता है।

साम्मेला - कुंवारी भात पाकर बारातियों का जनवासे में पहुंच जाने के बाद साम्मेला की तैयारी होती है। समाज के कोटवाल/जमादार, सरदार पंचगण व वधु पक्ष के समस्त परिवार वाले साम्मेला में शामिल होते है। साख द्वारा कुंकुम चावल का तिलक लगाकर बींद को गुड़ घी खिलाया जाता है।

तोरण - जब बींद राजा घोड़े पर सवार होकर मौड़ के मुख्य द्वार पर आते हैं, जहां उसी वक्त लौहार/खाती द्वारा बनाकर लाया गया तोरण लगाया जाता हैं। बींद को इस तोरण को बेधना पड़ता है।

पाणिग्रहण संस्कार - बींद बींदणी को गठजोड़ व हथलेना जुड़ाकर चंवरी के सामने एक झंवाड़ा रखा जाता है। पास-पास वर वधु को पाणिग्रहण संस्कार ग्रहण कराने ब्राह्मण पास लगे आसन पर बैठाता है।

कन्यादान - फेरों के बाद सेवरा दिए जाने के पश्चात कन्यादान दिया जाता है।

कन्यावला (व्रत पालना) - पाणिग्रहण संस्कार व कन्या का दान हो जाने पर कन्या पराई हो जाती है। औरतें गीत गाती हुई ढोल ढमाकों से दूल्ह दुल्हन के साथ अपने डेरे पर पहुंचते हैं।

डोरिया (समाज की रस्म) - डोरिया की रस्म समाज में समस्त पट्टियों की होती है। यह प्रथा विवाह के बाद समाज में मुख्य रस्म मानी जाती है। डोरिया की जाजम पर विराजमान समाज के समस्त सरदारों वर-वधू के परिवारों एवं समाज का कोई भी भाई छोटा या बड़ा एक समान समाज के सिरमौर होते हैं। डोरिया की जाजम पर विराजमान समाज के समस्त भाई बंधुओं को साफा पहनाना अनिवार्य होता है।

कंवर कलेवा - फेरों के बाद समाज का डोरिया व पीछे-पीछे पंचों के कार्यक्रम में कंवर कलेवा का विशेष ध्यान रखते हुए जानीवास में खेलावट के वास्ते जाना जो बारातियों को शक्कर, चाय, गेहूँ का आटा, सब्जी और हुक्का भरने के लिए तंबाकू व पतासों का वितरण करना और पुराने समय में बारातियों के साथ यदि कोई अमलदार होने पर उनके लिए तिजारा अमल भी दिया जाता था।

जात दिलवाना - कलेवा हो जाने के बाद बींद बींदणी की वधू पक्ष के कुल देवी देवता व इष्ट देवी देवताओं के स्थान पर नमन करवाना ही जात दिलवाना होता है।

मायरा - वधू व वधू पक्ष के ननिहाल का विवाह उत्सव पर विशेष ध्यान रखा जाता है। बींदणी को बिंदोले बैठाकर पहले वधू के माता-पिता द्वारा वधू के ननिहाल व वधू पक्ष के ननिहाल को शुभ विवाह का निमंत्रण देने गुड़ लेकर जाते हैं। उसे बत्ती ले जाना कहते हैं। ननिहाल पक्ष मे जो बड़ा होता है, उसको तिलक लगाकर बत्ती झेलाई जाती है।

लेहरका - मायरा के साथ लेहरका वालों का भी उसी अंदाज में स्वागत होता है। बेटी छोटी हो या बड़ी अपने पीहर पक्ष वालों का तिलक टीका करके घी गुड़ खिलाकर बधावा करती है।

प्रीतिभोज - मायरा पहनने हो जाने के बाद भोजन की व्यवस्था की जाती है।

सीख (विदाई समारोह) - सीख देने का कार्यक्रम भी किसी समारोह से कम नहीं होता है। इसलिए इसे विदाई समारोह भी कहते हैं।

विनायक प्रसाद - शुभ विवाह के बाद गणेशजी की शुभ कृपा दृष्टि परिवार व समाज पर बनी रहे, ऐसी आशा के साथ विनायक प्रसाद की जाती है। विनायक प्रसादी में वर-वधू पक्ष के समस्त परिवार बहन-बेटियां और ननिहाल पक्ष व समाज के गणमान्य महानुभाव सम्मिलित होते हैं।

गोड़ा झंवार - सीरवी सामज में गोड़ा झंवार कंवारा लड़के का सगपण किसी विवाहिता लड़की के साथ होने या किसी लड़के का विधवा लड़की को जीवन साथी बनाने से पहले उस लड़के की कंवार उतारना ही गोड़ा झंवार कहलाता है।

सीरवी समाज की सामाजिक व्यवस्था एवं नियम-सीरवी - समाज की सामाजिक व्यवस्था को हम निम्नलिखित व्यवस्था को हम निम्नलिखित बिंदुओं में समझ सकते हैं-

1. सीरवी समाज के लोग श्रीआई पंथ के ग्यारह नियमों का पालन अनिवार्य रुप से करते है। ये ग्यारह नियम निम्नलिखित हैं।[13]

1) झूठ नहीं बोलना चाहिए।

2) मदिरा-मांस का सेवन नहीं करना चाहिए।

3) ब्याज नहीं लेना चाहिए।

4) स्वार्थी नहीं होना चाहिए, जुआं नहीं खेलना चाहिए।

5) माता-पिता की सेवा करना चाहिए।

6) गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

7) परहित के मार्ग पर चलना चाहिए।

8) पराई स्त्री पर नजर नहीं लगाना चाहिए।

9) अतिथियों का स्वागत करना चाहिए।

10) पैंसों को लेकर बेटी का सौदा नहीं करना चाहिए।

11) ईश्वर का विस्मरण नहीं करना चाहिए।

2. सीरवी समाज में दहेज प्रथा का चलन नहीं है। यथा शक्ति गहने व कपड़ों का लेन-देन किया जाता है। मगर दहेज के नाम पर पलंग, गादी, बर्तन वगैरह वस्तुएँ देने का रिवाज समाज में नहीं है।

3. सम्बन्ध विच्छेद के मामले में यदि समाज में किसी कारणवश विवाहित लड़का-लड़की के आपसी सम्बन्धों में दरार पड़ जाए और परिवार के समझाने से भी न समझने पर प्रथम निर्णय दोनों गनायत आपस में बैठकर, दूसरा निर्णय दोनों पक्षों के भाइयों में होता है। तीसरा निर्णय संबंधित पक्ष के क्षेत्र ग्राम सभा स्तर पर, चौथा निर्णय अपनी बडेर या परगना समिति में जाकर प्राप्त करते हैं। वहां पर भी यदि पंचायती निर्णय

नहीं निकले तो संबंधित दोनों पक्ष महासभा की शरण लेते हैं। महासभा का फैसला दोनों पक्षों को मान्य होता है।

4. शास्त्रों की मर्यादानुसार समाज में कुछ बीते समय तक बालिकाओं का बाल विवाह किया जाता था। मगर आज कानून शारदा एक्ट के नियमों का पालन करते हुए समाज में नाबालिग बच्चों का विवाह नहीं किया जाता अर्थात् समाज में बाल विवाह पर पूर्ण रुप से प्रतिबंध है।

5. बाल विधवा का नाता - सीरवी समाज में बाल विधवा का नाता करने का रिवाज था। नाते के प्रति पुराने रीति-रिवाज प्रायः बंद से हो गए हैं।

6. बड़ेरो की विगत जानकारी एवं समाज की चल-अचल सम्पत्ति के संरक्षक का दायित्व समाज का केन्द्र श्री अखिल भारतीय सीरवी समाज खारड़िया का होता है।

7. सीरवी महासभा द्वारा चलाए जा रहे शिक्षा अभियान के तहत शिक्षा कोष में प्रतिदिन 1 रुपए के हिसाब से प्रति बडेर के क्षेत्र अधिकारी द्वारा वसूल कर महासभा में जमा कराया जाता है।

8. समाज में किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु होने पर रोने की पुरानी रुढ़िवादी परंपरा को न रखते हुए समाज के उस स्वर्गवासी आत्मा की शांति के लिए औरतों द्वारा हरियश गाए जाते है।

9. शोक मिलन बैठक पर मृत्यु के दिन अंतिम संस्कार के बाद मुंह एंठाई के पश्चात् बारह दिन तागा तोड़ने व छाया बिखरने तक खाना दाल-बाटी ही बनाना होता है एवं मृत्युभोज पर लापसी व अन्य मीठे व्यंजन को नहीं बनाया जाता है।[14]

संदर्भ ग्रंथ

1. राठौड़, ठाकुर रघुनाथ सिंह अमझेरा राज्य का इतिहास, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र 2007, पृष्ठ 108

2. द्विवेदी चौहान, डॉ. रेखा, डॉ.. सहदेव, मालवा के राठौड़, श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ, 2012, पृष्ठ 117

3. साक्षात्कार - दिनांक 04.11.2017 श्री कैलाश जी मोकाती निवासी मनावर, सीरवी समाज के प्रांतीय मीडिया प्रभारी मध्यप्रदेश।

काग, डायाराम हिराजी, सीरवी क्षत्रिय समाज गौत्र एवं गांव, डायाराम हिराजी काग, प्रथम संस्करण 23 मई 2009 पृष्ठ 18

4. लचेटा, सीरवी जसाराम, सीरवी (क्षत्रिय) समाज खारड़िया का इतिहास एवं बांडेरु वाणी, सीरवी जसाराम लचेटा, रामापुरम चेन्नई प्रथम संस्करण सन् 2011, पृष्ठ 7

5. सीरवी (क्षत्रिय) समाज खारड़िया का इतिहास, पृष्ठ 7

6. वही, पृष्ठ 11

7. सीरवी (चोयल), चंद्रसिंह जी, खारडिया, सीरवी रौ इतिहास, ताज प्रिंटर्स जोधपुर, सन् 2010, पृष्ठ 44

8. सीरवी (क्षत्रिय) समाज खारडिया का इतिहास, पृष्ठ 12

9. राठौड़, महेन्द्र कुमार, श्री आई जी प्रसाद, सीरवी संदेश चेरिटेबल संस्था, संस्करण 2016, पृष्ठ 23

10. मडाढ़, ठाकुर ईश्वर सिंह राजपूत वंशावली, भारत प्रिंटर्स जोधपुर सन् 1997, पृ. 88

11. सिंह रघुनाथ काली पहाड़ी, 'क्षत्रिय राजवंश, मुरार का प्रिंटर्स नवलगढ़ पृष्ठ 243

12. सीरवी (क्षत्रिय) समाज खारडिया का इतिहास, पृष्ठ 70

13. परिहार, पोमाराम, ज्योतिर्मय जीवन दर्शन, श्री जैकलजी आई माता सेवा समिति, नारलाई पाली संस्करण, 2011, पृष्ठ 6

14. सीरवी (क्षत्रिय) समाज खारडिया का इतिहास, पृष्ठ 63